

बलजाननु। जितसर्मयुका अलिकनेद॥ केदुका अघिजाननु वाहा यक्षि आयो क्लिमका जाननु य
क्षिवाटपनकरका जाननु॥ मित्रमाहा मित्रान्नाका जिवोय हिषकारलेशत्रु मित्रजारनु॥ पिडा
पुला जिवसर्मयुलाये हि मित्रको विचारगरनु॥ ॥ विदशागरनु जशो अंतरको कर्मक्षतशो
गरनु यकादशमाहा जतिगृहका अंतरनु च्याततियका अंतरमाहा ततियह नूच्या चिदशा
नयो जाननु येकादशमाहा जति अंतरनयातवयका अंतरमाहा तति को विदशानयो जाननु
॥ ॥ संक्षेपगन्थाका हो जाननु॥ ॥ शुभमस्तु सर्वदा कालं॥ ॥ श्रीसूर्याय नमः॥ ॥

